श्री सतनाम साक्षिणे नमः ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

श्री बसन्त विज्ञान माला

रचयिता

वेदान्त केसरी ब्रह्मनिष्ठ स्वामी बसन्तरामजी महाराज शिष्य पूज्यपाद् ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 सद्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज प्रेम प्रकाशी





परिवर्धित तृतीय संस्करण 2000
मार्ग शीर्ष पूर्णिमा सम्वत् 2052

"प्राक्कथन"

प्रिय सज्जनों !

इस संसार में प्रत्येक प्राणी सुख प्राप्ति की चेष्टा करता है, लेकिन संसार में मायावश प्राणी उस चिर सुख की उपलब्धि नहीं कर सकता है। जब तक जीव सन्तों की शरण में जा करके ज्ञान की प्राप्ति नहीं करता है तब तक चिर शान्ति की उपलब्धि नहीं होती है। वेद, दर्शन, उपनिषद्, गीता, स्मृति आदि का अगाध ज्ञान भण्डार है लेकिन इस वैज्ञानिक युग में इन शास्त्रों के अध्ययन करने का कम समय प्राप्त होता है। इस कारण महात्मा लोग बहुत ही परिश्रम करके मानव कल्याण के लिए सरल ग्रन्थों की रचना करते हैं।

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर परमादरणीय परम श्रद्धेय हमारे पूजनीय गुरु चरण श्री स्वामी बसन्तरामजी महाराज ने "बसन्त विज्ञान माला" की रचना की। इस छोटे से ग्रन्थ में अनेक विषयों पर स्वामी ने सरल व बोधगम्य भाषा में दोहों का निर्माण किया है। इसमें प्रार्थना, भगवन्नाम की महिमा, मनुष्य देह की महिमा व कर्त्तव्य, प्रेम, वैराग्यादि उपदेश के प्रकरण हैं। इसके अतिरिक्त योगाभ्यास एवं वेदान्त के विषय पर भी विषद विवेचन किया गया है।

इस दोहावली के अध्ययन करने से मनुष्य के हृदय में प्रेम, उत्साह, वैराग्य कर्त्तव्यादि सदाचार की भावनाएं प्रविष्ट हो जाती हैं तथा राग द्वेषादि चित्त के विकारों की निवृति होकर मानसिक शान्ति उपलब्ध होती है। इस विज्ञान माला का महात्म्य स्वामीजी ने एक दोहे में वर्णित किया है कि—

"ज्ञान ध्यान तो पावहीं, जीबन मुक्ति विदेह ।
पढ़ै सुने जो ग्रन्थ यह, बसन्त धार स्नेह ।"

यह स्वामीजी का तृतीय संस्करण छपकर तैयार हुआ है। बहुत समय से द्वितीय संस्करण समाप्त हो गया था लेकिन समयाभाव के कारण प्रकाशित न कर सके इसके लिए बार-बार तकाजे आ रहे थे ।

मैं आशा करता हूं कि पाठकगण इस परिवर्धित संस्करण का सम्यक् प्रकार से अध्ययन करके लाभान्वित होंगे । इस परिवर्धित संस्करण के 60 विषयों में 1330 दोहे हैं ।

विनोत :

ब्रह्मानन्द शास्त्री

"अनुक्रमणिका"

———

स्वामी जी के छपे हुए अन्य ग्रथ

1.	श्री अमर कथा AS	सिन्धी
2.	तन्दुरुस्ती जो खजानो	सिन्धी व देवनागरी
3.	माता मदालसा की कथा AA	सिन्धी
4.	राजा अलारक की कथा AA	सिन्धी
5.	राजा निर्मोही की कथा	सिन्धी
6.	कठोपनिषद्	सिन्धी
7.	ईश केनोपनिषद्	सिन्धी
8.	बसन्त भजनमाला	सिन्धी व देवनागरी
9.	स्वामी टेऊंराम का सक्षिप्त जीवन चरित्र कविता में	हिन्दी
10.	बसन्त वर्खा	हिन्दी
11.	बसन्त श्लोकावली AS	सिन्धी
12	Vigyan Mala	हिन्दी



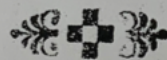




श्री सत्नाम साक्षिणे नमः ॐ गुरुपमात्मने नमः

श्री बसंत विज्ञान माला

मंगलाचरण



पूरण ब्रह्म गुरुदेव पुनि, पञ्च ईश अवतार ।
इनके युग पद पद्म पर, बसन्त करहुं जुहार ।१।
बसन्त जो बुद्धि चहत है, सुर गुर सन्त समाज ।
सा बुद्धि मुझको देह अब, गुरु गरोबनवाज ।२

॥ ईश प्रार्थना ॥

परम पिता परमात्मा, मेरी सुन अर्दास ।
बसन्त जन के कष्ट हर, दीजे आनन्द रास ।१।
तुम हो समर्थ हे हरी, दाता दीन दयाल ।
बसन्त जन की विनय सुन, काटो कर्म कराल ।२।
तुम नाथों के नाथ हो, मैं हूं नाथ अनाथ ।
हाथ धरे मुझ माथ पर, बसन्त करो सनाथ ।३।
हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीनबन्धु दातार ।
बसन्त की रक्षा करो, सुनकर प्रेम पुकार ।४।
प्रेम बिना सूखा हृदय, पावत नहिं आराम ।
बसन्त के मन प्रेम दे, हे हरि रस के धाम ।५।
प्रेम सहित भक्ति करूं, भगवन् मैं दिन रात ।
बसन्त मो मन ना रहे, जग की झूठी बात ।६।
भाव भक्ति मुझमें नहीं, नहिं सुमरन नहिं ज्ञान ।

बसन्त आया शरन तव, मेरा करो कल्यान ।७।
अशरन के तुम शरन हो, राख शरन अब मोहि ।
बसन्त पर कृपा करो, मैं नित ध्याऊं तोहि ।८।
सर्व आसरा छोड़ मैं, शरन पड़ा तव आय ।
बसन्त अपना जान के, रक्षा करो हरिराय ।९।
अन्तर बाहिर शत्रुगण, मोहि करत जे नाश ।
बसन्त तिनकी शत्रुता, हे हरि करो विनाश ।१०
दुःख के बादल चौ तरफ, घेर रहे हरिराय ।
बसन्त कृपा पवन से, इनको देहि उड़ाय ।११।
संकट हरन सुख करन हरि, हर सब संकट मोर ।
बसन्त दे सुख संपत्ति, मोहि भरोसा तोर ।१२
हे प्रभु धीरज रुप तुम, धीरज दे मुझ मांहि ।
सुख दुःख संपत विपत्त मंहि, मन घबराये नांहि।१३
तुम पावन मुझ पतित का, हे हरि करो उद्धार ।
बसंत का मन शुद्ध करो, देहि विराग विचार ।१४

दुष्ट बुद्धि से करत हूं, दुष्ट कर्म दिन रैन ।
बसन्त को हरि सुमति दे, जांते पाऊं चैन ।१५।
पाप किये मैं बहुत ही, पुण्य न कीना एक ।
बसन्त को जन जान के, दे मुझ अपनी टेक ।१६।
कायिक वाचिक मानसिक, जे अघ मुझसे होय ।
बसंत जन की विनय सुन, क्षमा करो हरि सोय ।१७
पिछले अवगुण बख्श ले, आगे सुमती देह ।
अवगुन मुझ से होय नहिं, हे हरि मांगू एह ।१८।
बसन्त मुझ में गुण नहीं, अवगुण की हूं खान ।
अवगुन हरिगुन देहि मुझ, हे हरि कृपा निधान।१९
हे हरि तुम निर्दोष हो, मुझ में हैं बहु दोष ।
बसन्त को निर्दोष कर, देवो जीवन मोक्ष ।२०।
काम क्रोध मुझ में भरा, लोभ मोह अभिमान ।
बसन्त कैसे पाऊं मैं, हे प्रभु भक्ति ज्ञान ।२१।
जन्म जन्म भटकत फिरा, कहँ नहिं पाई ठौर ।

बसंत दे संतोष हरि, मिट जा मन की दौर ।२२

विषय वासना से भरा, मन दौड़त दिन रात ।
कहे बसंत हरि देहि तुम, मेरे मन को शान्त ।२३

शाँति दाँति हरि क्रान्ति दे, बसंत के मन मांहि ।
काम क्रोध मद लोभ की, लहर उठे कब नाँहि ।२४

मेरी ओर न देख प्रभु, देखो अपनी ओर ।
बसन्त जन को देहि अब, चरन कमल में ठौर ।२५

साजन मेरी श्रुति कर, कबहूं भुलावो नाँहि ।
बसंत को नित राखिये, अपने चरनो मांहि ।२६

भो भगवन मुझ दीजिये, भाव भक्ति गुण ज्ञान ।
बसन्त देह निरोग हो, मन में शांति महान ।२७

भो भगवन मुझ पर करो, करुणा, करुणा निधान ।
जानूँ देखूँ आपमय, बसन्त सकल जहान ।२८

सब में देखूँ आपको, जपूँ तुम्हारा नाम ।
बसन्त मो मन ना रहे, और कलपना काम ।२९

कञ्चन कामिनि कीर्ति, बसन्त काम अरु कोह ।
हे हरि ईर्षा अहम् बुद्धि, कबहूं न व्यापें मोहि ।३०

भक्त वत्सल भगवान मैं, शरन पड़ा तब आय।
बसन्त माया मोह से, हे हरि मोहि बचाय ।३१।

तन मन इन्द्रिय प्रानमम, हे हरि रहहिं निरोग ।
बसंत शुभ मार्ग चले, दुःख का होय वियोग ।३२।

दर्शन देखै नैन हरि, कथा सुनहिं मम कान ।
पांव चलहिं सत्संग में, हाथ करहिं नित दान ।३३

रसना बोले मधुर सच, सुमरे सोऽहं घ्राण ।
मन चित्त चितवे ब्रह्म को, बुद्धि में नैष्ठिक ज्ञान।३४

सहज समाधि बनी रहे, ब्रह्म तत्व के माँहि ।
कारण कार्य जगत यह, बसन्त भासे नाहिं ।३५।

बसन्त तुझ से मांगता, हे हरि तुम सुन लेय ।
औरों के दुःख हरन की, शक्ति मुझ को देय ।३६



सत्गुरु प्रार्थना

सत्गुर यह अर्दास सुन, पूर्ण कीजिये आश ।
बसन्त को निज सेव दे राखो अपने पास ।१।
पाद पद्म रज मांगहूं, देहि मुझे गुरुदेव ।
बसन्त शिर पर तिलक कर, पाऊं निजातम भेव।२
तुम हो मेरा परम गुरु, मैं हूं तेरा दास ।
नाम दान पुनि ज्ञान दे, काटो जमकी फास ।3।
बसन्त जन की विनय सुन, शक्ती दो गुरुदेव ।
तन मन धन पुनि वचन से, करूं सर्व की सेव ।४।
कष्ट विघ्न दुःख देखके, मो मन होत अधीर ।
बसन्त की यह विनय सुन, सत्गुर दीजे धीर ।५।
सत्गुर तुझ बिन को नहीं, सूझत है रखवार ।
बसन्त की करुणा करे, रक्षा करो हरवार ।६।
हे समर्थ गुरुदेव अब, मेरी करो सहाय ।

सुख सम्पति घर में रहे, कष्ट विघ्न दुःख जाय ।७
सत्गुर मुझको सुमति दे, करो कुमति को नाश ।
बसन्त श्रद्धा प्रेम पुनि, भक्ति ज्ञान प्रकाश ।८।
सहन शक्ति सन्तोष सच, सत्संग सुमरण सेव ।
शम दम श्रद्धा सादगी, संजम दे गुरुदेव ।९।
हे सत्गुर मो मन रहे, आतम का अनुराग ।
बसन्त कब भूले नहीं, ब्रह्म विचार विराग ।१०

सामूहिक प्रार्थना

हे पूरण परमातमा, सत्चित् आनन्द रूप ।
व्यापक विश्व आधार अज, अखंड अगम अनूप ।१
हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, हमरी सुन अर्दास ।
भारत के संकट सभी, शीघ्र करो विनाश ।२।
दुष्टों को दण्ड दीजिये, भक्तों की रख लाज ।
भारत की जयकार कर, बना रहे स्वराज ।३।

दुःख भंजन सुख सदन हरि, दाता दया निधान ।
बसन्त सबको सुमति दे, भक्ती आत्म ज्ञान ।४।
धर्म कर्म हो विश्व में, सम्पत्ति सद् व्यवहार ।
भाव भक्ति सबको करे, आपस में हो प्यार ।५।
होय सुखी संसार सब, दुःख ना पावे कोय ।
रोग रहित तन स्वस्थ हो, पुनि मन निर्मल होय ।६।
बादल वर्षे समय पर, खेती दे बहु धान, ।
दूध दही दे गाय बहु, आनन्द होय महान ।७।
दुर्जन सज्जन होय पुनि, सज्जन पावे ज्ञान ।
ज्ञानी दे के ज्ञान को, मुक्त करे जन आन ।८।
विप्रों में विद्या बढ़े, क्षत्रिय हो रणधीर ।
वैश्यों में सत्यता बढ़े, शूद्र गुणी गम्भीर ।९।।
धर्म सनातन को सदा, शक्ति बढ़ती जाय ।
हम सब धारहिं धर्म को, शक्ति दो हरिराय ।१०



सत्गुरु महिमा

सत्गुरु इक संसार सब, तीनों देव समेत ।
बसन्त सबसे अधिक गुरु, धर गुरु चरनन हेत ।१।
सत्गुरु पूरन ब्रह्म है, सत्गुरु देवन देव ।
बसन्त गुर की सेव कर, पाय निजातम भेव ।।२।
सत्गुरु हरि का रूप है, हरि है सत्गुरु रूप ।
सगुन रूप गुरुदेव है, निर्गुण हरि स्वरूप ।।३।
बसन्त सत्गुरु देव सम, और देव को नांहि ।
सत्गुरु का दर छोड़कर, बाहिर भटकत कांहि।।४।
सत्गुरु आवत जगत में, भव सिन्धु तारण हेत ।
भाव भक्ति निज ज्ञान की, बसन्त बांधत सेत ।।५।
बसन्त जग में एक है, समर्थ सत्गुरु देव ।
पार करत भव सिन्धु से, दे निज आतम भेव ।।६।
जन्म जन्म के पाप सब, सत्गुरु करत विनाश ।

बसन्त निर्मज कर बुद्धि, दे निज ज्ञान प्रकाश ।७।

बसन्त देश विदेश में, सतगुरु करत सहाय ।
कष्ट विघ्न दु:ख दूर कर, दर्शन देत दिखाय ।८।

बसन्त सतगुरु है सदा, अभिमत फल दातार ।
श्रद्धा से सेवा ररे, पाय पदार्थ चार ।९।

जगत पदार्थ देत हैं, बसन्त देवी देव ।
ब्रह्म ज्ञान वे देत नहिं, पावो गुर से भेव ।।१०।।

बसन्त भगवत है सदा, ज्ञान विज्ञान भंडार ।
सोई सतगुर रूप धर, देते ब्रह्म विचार ।११।

भव सिन्धु गहर गम्भीर है, गुरु बिन तरियो न जात ।
करणधार गुरुदेव ही, बसन्त पार लगात ।१२।

जैसे नैन विहीन को, होत न रूप विज्ञान ।
तैसे गुरु उपदेश बिन, होत न आतम ज्ञान ।१३।

पूरण सतगुरु देत है, बसन्त आतम ज्ञान ।
पूरण शिष्य हो लेत है, देके तन मन प्रान ।१४।

साचा शिष्य पावत सदा, गुरु से सब कुछ तात ।
कपटी शिष्य पावत नहीं, दुःखी रहत दिनरात । १५

सूक्ष्म ब्रह्म का सूक्ष्म है, मार्ग इस जग मांहि ।
तांका उपदेशक गुरु, मिलत भाग बिन नांहि । १६

बड़े भाग से मिलत है पूरण सतगुरु देव ।
शिष्य श्रद्धालू देख जो, देत ब्रह्म का भेव । १७

सतगुरु साचा जगत में, बसन्त दुर्लभ आंहि ।
तांको अवश्य मिलतहै, प्यास सच्ची जिह मांहि । १८

हरि कृपा से मिलत गुरु, गुर कृपा से ज्ञान ।
मिलत ज्ञानसे मुक्तिपुनि, बसन्त यह सत्‌जान । १९

बसन्त ज्ञान विज्ञान का, सतगुरु है दातार ।
श्रद्धा से गुर शरन जा, लेवो ज्ञान भंडार । २०

जाग उठो झट भागकर, जा सतगरु के द्वार ।
आतम तत्त्व को जानके बसन्त हो भवपार २१ ।

बसन्त श्रद्धा प्रेम से, सतगुरु शरनी जाय ।

पूरी कर जग कामना और ज्ञान गुण पाय ।२२।
बन्दन कर गुरुदेव के, चरन कमल के मांहि ।
सेवा पूजा नित करो, बसन्त भूलो नांहि ।२३।
ब्रह्म रूप गुरुदेव की, श्रद्धा से कर सेव ।
बसन्त गुरु के वचन सुन, पाय निजातम भेव ।२४।
गुर की आज्ञा मानकर करलो गुर की सेव ।
सत्गुरु को प्रसन्न करो, मेटे मन अहं मेव ।२५।
सब देवों का देव है, पूरण सत्गुरु देव ।
बसन्त तांकी नितकरो, तन मन धन से सेव ।२६।
सेवा से गुरुदेव को, प्रसन्न कर दिन रात ।
बसन्त गुरु प्रसाद से, जीव मुक्त हो जात ।२७।
गुरु सेवा से शिष्य को, रिद्धि सिद्धि चेरी होय ।
बसन्त लोक परलोक में, हो यश भागी सोय ।२८
बसन्त गुरु की सेव से, मिलत ज्ञान विज्ञान ।
भक्ति मुक्ति हरि प्रेमरस, जंह तंह सुख सन्मान ।२९

बसन्त जिस पर धरत है, सत्गुरु अपना हाथ ।
तांके पीछे फिरत है, स्वयं त्रिलोकीनाथ ।३०।
बसन्त गुरु के भक्त का, सुरनर होवत दास ।
देत सर्व सुख सम्पदा, विपदा करत विनाश। ३१।
सत्गुरु के निज भक्त को, जोहि न साकत कोय ।
बसन्त भांवे जगत में, कोटि शत्रु भी होय ।३२।

सत्गुरु की कृपा

बसन्त सत्गुरु देव की, जिसपर कृपा होय ।
कथा श्रवण हरि भजन में, लागत है नर सोय ।३३
गुरु कृपा से होत है, कठिन काज जग माँहि ।
बसन्त सत् सत् कहत हूं, झूठ कहूं मैं नाहिं ।३४।
गुरु कृपा से देत है, दर्शन आतम देव ।
गुरु कृपा से करत है, विष्णु शंकर सेव ।३५।
गुरु कृपा सम और को, साधन नहिं जग माँहि ।

बसन्त प्रसन्न होय गुरु, तो दुर्लभ कछु नाहिं ।३६।
गुरु कृपा से बनत है, बसन्त नर का भाग ।
मंद भाग मिट जात है, गुर से कर अनुराग ।३७।
गुरु की कृपा जीव का, जंह तंह करत कल्यान ।
बसन्त जानत विमुख नहिं, समुझत श्रद्धावान ।३८
सत्गुरु की कृपा बिना, होत न आतम ज्ञान ।
गुरु कृपा से होत है, बसन्त ब्रह्म विज्ञान ।३६।
बसन्त सत्गुरु की दया, हरत शोक अज्ञान ।
जनम मरण दुःख द्वन्द्व हर मुक्ति देत महान ।४०।
कर दण्डवत् प्रणाम पुनि, तन मन दक्षिणा देह ।
बसन्त सब मद मान तज, गुरु से दीक्षा लेह ।४१।
गुरु कृपा कर देह जब, महावाक्य समुझाय ।
बसन्त तांको सुमर नित, भूल न कबहूं जाय ।४२।
और मन्त्र जे जगत में, चित्त चंचल कर देत ।
बसन्त इक गुरु मन्त्र ही, मन को थिर कर लेत ।४३

गुरु मत्र के धनुष में, मन का बाण सुजोड़ ।
ब्रह्म लक्ष में लीनकर, भेद भरम को तोड़ ।४४।
महामंत्र गुरुदेव का, भरम करत सब दूर ।
स्मरन कर वीचार से, होय ज्ञान भरपूर ।४५।
भवसागर के बीच में, है जहाज गुरु नाम ।
बसन्त चढ़कर प्रेम से, पावो पूरण धाम ।४६।
बसन्त गुरु का ध्यान धर, सुमरो सतगुरु नाम ।
पूजहूं गुरु के चरन युग, पावो मन विश्राम ।४७
शिव स्वरूप गुरुदेव का, धर मन हिदे ध्यान ।
बसन्त सुमरे शब्द को, पावो पद निर्वान ।४८।
जगत पदार्थ ब्रह्म सुख, जे चाहत हो मीत ।
सतगुरु से यह मिलत है, बसन्त राख प्रतीत ।४९

सतगुरु के लक्षण

ब्रह्म ज्ञान उपदेश दे, सतगुरु सो पहिचान ।

बसन्त तांके बोध से, शिष्य का होत कल्यान ।
बसन्त आतम ज्ञान जिह, नहिं सशंय भेद भ्रांति ।
सत्गुरु तांको कहत है, जांका मन है शान्ति ।५१।
शान्ति रूप निर्मान शुचि, जांको काम न क्रोध ।
बसंत भवसिन्धु तारते, तिस सत्गुरु का बोध ।५२।
गु कहिये अन्धकार को, रू कहिये प्रकाश ।
तिमर हरे प्रकाश दे, बसंत गुरु लख तास ।५३।
सब संशय को छेदकर, देत अभेद विज्ञान ।
बसन्त तिस गुरुदेव पर, वारो तन मन प्रान ।५४।
पूरण गुरु से लीजिये, पूरण सदुपदेश ।
पूरण पद में जाय के, बसन्त कर प्रवेश ।५५।
ज्ञान ध्यान जो देत नहिं, केवल फूंकत कान ।
बसंत तिस गुरुदेव से, कबहूं न होत कल्याण ।५६।
शिष्य के धन को जो हरे, हरे न मन संताप ।
बसंत तिस गुरुदेव का, मुख देखन है पाप ।५७।

ज्ञान हीन बिन शान्ति जो, झूठा गुरु है सोय ।
बसंत तांके संग से, तरत न देखा कोय ।५८।
मन्त्र जन्त्र जो करत है, धरत न हरि का ध्यान ।
मांगत शिष्य से दान धन, झूठा गुरु सो जान ।५९।
झूठे गुरु के त्याग में, तूं जनि देर लगाय ।
बसन्त तांके संग में, जन्म अक्यार्थ जाय ।६०।
झूठे गुरु से झूठ की, बसन्त प्राप्ति होय ।
तांते तांको त्याग के, सांचे गुरु को जोय ।६१।
सांचे गुरू के शरन में, सांच मिलत स्वराज ।
बसन्त हृदय शान्ति हो, कछु न कहे जमराज ।६२

भगवन्नाम की महिमा

सत् चित आनन्द ब्रह्म है, अनंत मंगल धाम ।
बसन्त दे जो सर्व सुख, तिसका सुमरो नाम ।१।
बसन्त निश्चय कहत हूं, झूठ न बोलहुं बात ।
सिमरत जो हरिनाम को, भवसिन्धु सो तर जात ।२

धर्म कर्म संसार के, हरि स्मरण सम नांहि ।
बसन्त तांते सर्व तज, कर स्मरन मन मांहि ।३।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, निर्भय हो निस्काम ।
निशदिन हरि का भजन कर, पाओ पूरण धाम ।४।
हरि स्मरण पूजन यजन जप तप दान स्नान ।
बसन्त श्रद्धा से किया, स्वल्प होत महान ।५।
श्रद्धा से जो जपत है, निश दिन हरि का नाम ।
बसन्त सो पावत सदा, जंह तंह सुख विश्राम ।६।
साधन साधे और के, बसन्त जो फल होय ।
राम नाम के स्मरने, मिलहिं वेग फल सोय ।७।
काज सिद्धि जो चहत हो, तो स्मरो श्रीराम ।
राम भजन को छोड़ के, करो न दूसर काम ।८।
बसन्त जो जन जपत नहिं, राम नाम सुख धाम ।
दुःख भोगत पुनि होत नहिं, तांके पूरण काम ।९।
धाम पुरी सब देव के, भेंटे जो फल होय ।

बसन्त भगवत भजन से, पावत है नर सोय ।१०।
सब देवन के यजन से, बसन्त जो फल होत ।
केवल हरि के भजन से, सो फल होत उद्योत ।११।
गंगा आदी तीर्थ के, नाये जो फल होत ।
एक राम के भजन से, बसन्त मिलता सोय ।१२।
अश्वमेध यज्ञ करन से, यागक जो फल पात ।
बसन्त सो फल मिलत है, राम भजन से तात ।१३।
काम धेनु चिंतामणी, कल्पबृक्ष है नाम ।
बसन्त स्मरत नाम को, पूरण हो सब काम ।१४।
धर्म अर्थ यश काम सुख, चाहत मोक्ष जु कोय ।
बसन्त हरि के भजन से, पावत है नर सोय ।१५।
जिस जन के मन में बसे, मंगल मय हरि नाम ।
बसन्त तिनके विघ्न बिन, पूर्ण हो सब काम ।१६।
विपत विध्न हो लाख पुनि, दुश्मन कोटि होय ।
बसन्त भगवत नाम से, पहुंच न साकत कोय ।१७।

सर्व आसरा छोड़ जो, लेत अलख की ओट ।
बसन्त तांको लगत नहिं, कबहूं किसकी चोट ।१८।
बसन्त हरि रखवार जिह, कोइ न मारत ताहि ।
कोट शत्रु की शक्ति भी, टूट जात क्षण माहिं ।१९।
हरी भजन से विमुख का, तन मन रोगी होय ।
बसन्त करत भजन जो, रहत निरोगी सोय ।२०।
सर्व रोग की औषधि, केवल हरि का नाम ।
नाम जपे पा बसन्त तुम, तन मन के आराम।२१।
नाम जपत जो प्रेम से, दुःख नहिं पावत सोय ।
बसन्त सुख सम्पत सदा, तांके घर में होय ।२२।
बसन्त इस संसार में जे सुख चाहत जीव ।
आन रसन को त्याग के, राम नाम रस पीव ।२३।
राम नाम के जाप से, नाश होत सब पाप ।
बसन्त शीतल हृदय हो, रहत न मन संताप ।२४।
उठत बैठत नाम जप, खाते पीते सोय ।

बसंत समय अमोल है, बातन में मत खोय ।२५

तन से सब व्यवहार कर, मुख से नाम उच्चार ।
नैनों से हरि निरख तू, हृदे तत्व विचार ।२६।

सर्व काम को छोड़कर, सुमरो हरि का नाम ।
हरि स्मरण से होत है, बसन्त मन आराम ।२७।

बसन्त जप तू रात दिन, राम नाम मन लाय ।
सहज समाधि लगाय के, परमानन्द को पाय ।२८।

नाम जपत हरि ध्यान में, होस मगन जो नीत ।
बसंत तांकि करत हरि, सेवा बनकर मोत ।२६।

बसंत मुक्त द्वार यह, दुर्लभ नर तन पाय ।
जो न भजत भगवान को, सो नर नरके जाय ।३०।

मानुष तन में हरि भजो, बसन्त होय सचेत ।
भजन बिना नर जगत में, पावत योनि प्रेत ।३१।

बसन्त हरि के भजन बिन, जीव पड़त भव कूप ।
नाम जपे नर होत है, नारायण स्वरूप ।३२।

बेमुख हो हरि भजन से, करत सदा, जो पाप ।
बसन्त सो नर नरक महिं, पावत अति संताप।३३।
आलस्य कर जो जपत नहिं, बसन्त गुरु गोपाल ।
डार फास गल त्रासदे, सिंह मारत जम काल।३४।
बसन्त मरती बार जो, जपत राम का नाम ।
पावन हो सब पाप हर, पावत हरि का धाम।३५।
जिह्वा तन मन प्रान से, निशदिन जपिये नाम ।
बसन्त आनन्द पाय तुम, छोड़ कल्पना काम।३६।
जैसे कृपण दाम को, चिन्त करत दिन रात ।
बसन्त तैसे नाम भज, बोल न दूजो बात।३७।
हास्य द्वेष भय क्रोध वा, प्रेम काम से जोय ।
एक बार हरि नाम ले, कोट पाप सो खोय।३८।
करत भजन जो प्रीति से, लेकर गुरु आधार ।
बसन्त सो जावत नहीं, कबहूं जमके द्वार।३९।
और नाम के जपन से, और सर्व फल होय ।

बसन्त गुरु के नाम बिन, मुक्त न पावत कोय ।४०।
अनन्त स्वरूप ब्रह्म है अनंत उसके नाम ।
बसन्त जो गुरु देहि सो नाम जपो सुख धाम ।४१।
सत्गुरु नाम जहाज है, पार करत भव सिन्धु ।
बसन्त सिमरे नाम को, पाओ परमानन्द ।४२।
बसन्त गुरु का नाम जप, भेद भर्म कर दूर ।
पाप ताप संताप सब, हो जावहिं काफूर ।४३।
बसन्त सत्गुरू नाम जप, अर्थ सहित हरवार ।
तीनों पढ़दा तोड़ के, देखो निज दीदार ।४४।
बसन्त गफलत छोड़कर, बिन रसना रट नाम ।
मन में ओऽम् नाम जप, स्वासे सोऽहम् नाम ।४५।
बसन्त सोऽहं नाम जप, स्वास स्वास के माहिं ।
सो मैं पूर्ण ब्रह्म हूं, यह कब भूलो नाहिं ।४६।
ओऽम् में सब मंत्र हैं, ओऽम् सोऽहं माहिं ।
तांते सोऽहम् नाम जप, बसन्त भटकत क.हिं ।४७

स्वासा सोऽहं जपत है, बसन्त दिन अरु रात ।
माया से मन मोड़ के ध्यान धरो तुम तात ।४८।
निशि दिन सोऽहं नाम जप, सफल करो निज स्वास
बसन्त सोऽहं जाप बिन, मिटहिं न जम की त्रास ।।
ओऽम् का नित ध्यान धर, ओऽम् का कर जाप ।
बसन्त ओऽम् की लक्ष लखि, जानो अपना आप ५०
सहस द्वादस वार जो, जपत ओऽम् दिन रैन ।
सो योगी पावत सदा, बसन्त ब्रह्म सुख ऐन ।५१।
बसन्त जो जन प्रेम से, नाम जपत मन जीत ।
पावत सो नर परम पद, यह मन राख प्रतीत ।५२
बसन्त प्रीत प्रतीत से, करो नाम का जाप ।
मैला मन ऊजल करो, जानो अपना आप ।५३।
बिना भजन भगवान के, मन निर्मल ना होत ।
बसन्त निर्मल मन बिना, ज्ञान न होत उद्योत ।५४
मैला मन तब जानिये, जब मन भोगन आश ।

आश तजे बिन नाम का, बसन्त हो न हुलास ।५५

नाम सदा सुख धाम है, कर्त्ता पूरण काम ।

सुमर सुमर पावंहु सदा, बसन्त तुम आराम ।५६।

बसन्त उधारे नाम बहु, नाच ऊंच नर नार ।

तांको सिमरे रैन दिन, भव सिन्धु उत्तरो पार ।५७

कुबड़ी करमा भोलनी, गनका गौतम तीय ।

नाम जपे अघ ओघ हर, बसन्त पाया पीय ।५८।

सोची मोचो नाम जप, प्रकट भये जग माँहि ।

बसन्त श्रद्धा भाव से, निशदिन सुमरो ताँहि ।५९

घने भक्त ने प्रेम से, बसन्त सुमरन कीन ।

गोविन्द गाय चरावते, होय तास आधीन ।६०।

त्याग कसाई कर्म को, सधने सुमरयो नाम ।

बसन्त तोड़ भीत को, बिपत हरी घनश्याम ।६१

द्रौपदा ने दीन हो, कीन कृष्ण का ध्यान ।

बसन्त तांके हित धरा, वसनरूप भगवान ।६२।

सुमरन कीना सैन ने, बसन्त प्रीत लगाय ।
नाई बनकर भूप का, कुष्ट हरा हरि आय ।६३।
भक्त सुदामा भक्ति से, गया कृष्ण के पास ।
बसन्त तांका दूःख हर, दीनो हरि सुख रास ।६४।
बसन्त आधा राम कहि, मुक्त भये गजराज ।
जपते सारा नाम जो, पावत सो स्वराज ।६५।
वाल्मीक तज पाप को, उलटा जपकर राम ।
बसन्त पाया परमपद, जग में कीना नाम ।६६।
रंका बंका नाम जप, पाया मन आराम ।
धूली सम धन समझके, बसन्त भये निष्काम ।६७
अजामेल जप नाम को, पाई मुक्ति अनूप ।
बसन्त वैकुन्ठ में गया, धार हरी का रूप ।६८।
बसन्त नामे नाम जप, जंह तंह देखा राम ।
बहुत बार दर्शन किया, कीने सबके काम ।६९।
भक्त ध्रुव मन दृढ़ कर, हरि का स्मरण कीन ।

अटल धाम पुनि राज पा, होया दीन अदीन ।७०।
नाम जपत प्रदलाद को, दूःख न लागा कोय ।
विपदा में रक्षा करो, हरि नृसिंह वपु होय ।७१।
हनुमान जप नाम को निज वश कोना राम ।
बसन्त राम प्रताप से, किये कठिन सब काम ।७२
बंसन्त शंकर नाम जप, अचल समाधि लगाय ।
मुक्त करत वाराणसी, तारक मंत्र दृढ़ाय ।७३।

प्रेम

प्रेम, रूप परमात्मा, परमेश्वर है प्रेम ।
बसन्त दोनों एक लख, प्रेम करे पा ज्ञेम ।१।
लगन लगी जा ईश से, प्रेम कहावे सोय ।
बसन्त माया से लगी, मोह कहततिहं लोय ।२।
कब रोना कब हंसना, कब करना चुप ध्यान ।
बसन्त गाना नाचना, प्रेम लक्षण पहिचान ।३।

पुरुषार्थ कर प्रेम से, प्रेम पन्थ में लाग ।
बसन्त प्रेम प्रकाश से, करि हरि में अनुराग ।४।
प्रीतम हित जो सब तजे, प्रेमी कहिये सोय ।
बसन्त ऐसा जगत में, बिरला प्रेमी होय ।५।
प्रीतम के पद पद्म पर, करे निच्छावर प्राण ।
प्रेमी पावत परम रस, वसन्त हरि मद मान ।६।
प्रेमी प्रीतम को बिटा, अपने दिल के मांहि ।
सूनी दिल प्रीतम बिना, शोभा पावत नांहि ।७।
बसन्त शैय्या प्रेम पर, चेतन चदर बिछाय ।
शब्द पत्ती से सोय कर, श्रुति सुहाग को पाय ।८।
प्रीतम तेरा जागता, तेरे हित दिन रात ।
बसन्त तू भी जाग के, प्रीतम से कर बात ।९।
प्रीतम चित्त का चोर है, तू भी हो जा चोर ।
चोर चोर से मिलत है, बसन्त मिलत न और ।१०
पहले गुरु से प्रेम कर, पीछे लख करतार ।

बसन्त छत बन जान हित,खड़ी करो दीवार ।११
प्रेम आग में जार दे, मैं मेरा अहंकार ।
एक मेक हो पीय से, बसन्त पा दीदार ।१२।
प्रथम पतंग से सीख ले, प्रेम करन की रीत ।
बसन्त पीछे राखले, प्रीतम से तुम प्रीत ।१३।
प्रीत करत ही पतंग जिम, देत दीप में प्रान ।
बसन्त ऐसे प्रीत में, प्रीतम को दे जान ।१४।
नेह निभावन सीख ले, मीना से तुम तात ।
बिछुड़त प्रीतम तोय से, बसन्त वह मरजात ।१५।
मच्छ कच्छ आदी जीव बहु, रहते हैं जल मांहि ।
बसन्त प्रीती मीन सम, और किसी की नांहि ।१६
ओरों का घर उदक है, जीवन किस का नांहि ।
जीवन जल है मीन का,बसन्त सोच मन मांहि ।१७
चात्रक स्वातां बून्द बिन, लेत न जल जिम और।
बसन्त तिम हरि प्रेम बिन, विषय ओर मत दौड़

देख प्रेम पय नीर का, मित्र दुःखे दुःख पाय ।
होत सुखी सुख में सदा बसन्त सहज स्वभाय ।१९
लगन लगी जा पीय से, ताहिं हृदे में राख ।
बसन्त अपने आप तुम, काहूं को मन भाख ।२०।
प्रीतम तेरे प्रेम को, जानत है मन माहिं ।
बसन्त भोगी भूण्ड जन, कबहूं जानत नाहिं ।२१।
प्रेमी अपने प्रेम को, राखो उर में गोय ।
बसन्त प्रकट होत हो, जात दीप ज्यों खोय ।२२।
प्रीतम हित तुम रोय के, हृदे प्रेम जगाय ।
बसन्त जागे प्रेम को, चेतन होय बढ़ाय ।२३।
प्रीतम के गुण देख के, प्रीतम से जिय जोड़ ।
तर्क करे अवगुण धरे, बसन्त मुखना मोड़ ।२४।
बसन्त तर्क कुतर्क से, प्रीति रीत घट जात ।
चित शांती में रहत नहिं, मन में हो उत्पात ।२५।
बसन्त नेह लगाय के, आधे में मत तोड़ ।

दुःखसुख शिर पर सहनकर,नेह निभावो तोड़।२६
नेह लगाना सुगम है, अगम निभाना जान।
नेह निभावत बसंत को,दुःखसुख सहबुद्धिमान।२७
हे प्रेमी सुन कान दे सुन्दर शिक्षा एह।
तन मन धन दे प्रान पर, नेह न जाने देह।२८।
प्रीतम जो दुःख देह तो, बसन्त परीक्षा जान।
धीरज मन में आन के,सहन करो हित मान।2९।
सुख दुःख आदी द्वन्द को, सहन करत जो तात।
बसन्त आनन्द पाय के,जीव मुक्त हो जात।३०।
प्रीतम तेरे प्रेम में, भूल गया संसार।
बसन्त तब अनुग्रह से, पाया पद निर्धार।३१।
दर्शन कर निज देव का, होया मन मस्तान।
देह गेह की सार नहिं, धरत उसी का ध्यान।३२।
सार तार मन यार को, बसन्त और न तात।
लगन लगी मन मगन भया,जाने को दिन रात।३३

"विरह"

प्रीतम तेरे दरस बिन, मोहि न आवे चैन ।
बसन्त तेरे विरह में, तड़फत हूं दिन रैन ।१।
रैन बिताऊँ रोय कर, दिन को खोल कपाट ।
बसन्त नित देखत रहूं, प्रीतम तेरी बाट ।२।
अब मैं तेरी हो चुकी, केवल तू अपनाय ।
बसन्त तुम बिन कौन है, मोहि गले जो लाय ।३।
प्रीतम यह सन्देश सुन, मन में फेरि विचार ।
बसन्त मेरे प्राण का, हो तुम इक आधार ।४।
मम जीवन आधार तुम, जैसे तन का प्रान ।
प्राण बिन तन ना रहे, बसन्त त्यों मम जान ।५।
बसन्त तेरे दरस बिन, मो मन रहत उदास ।
करि कृपा मोहि दरस दे, पूरण करिये आश ।६।
बसन्त जैसे मीन का, जीवन जल बिन नाहिं ।

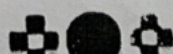
तैसे मेरा जीवना, तुम बिन नहिं जग माहिं ।७।
प्रीतम तेरे विरह में, जीव जरत है मोर ।
बसन्त विछुड़त चान्द से, जैसे जरत चकोर ।८।
चकोर बिछुड़त चान्द से, बसन्त खात अंगार ।
चाहत जल कर जा मिलूं, प्रीतम से इकबार ।९।
बसन्त पपिहा प्रेम से, निशदिन करत पुकार ।
प्रीतम बादल मोहि दे, दर्शन बून्द उदार ।१०।
मोहि भुलाओ नाहिं तुम, मैं न भुलाऊँ तोहि ।
बसन्त करुणा कर प्रभु, अब अपनाओ मोहि ।११।

"हरि की प्रीति"

विषय वासना त्याग के, हरि से करले प्रेम ।
दुःख न व्यापै देह में, बसन्त हो मन क्षेम ।१।
बसन्त हरि से प्रीति कर, छोड़ जगत जंजाल ।
प्रीति जगत की देत दुःख, हरि की करत निहाल २।
बसन्त हरि से प्रीति कर, तजि लोगों की प्रीति ।

लोक प्रीति से जात है, बृथा आयू बीत ।३।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे दीप पतंग ।
आप जलावत अग्नि में, छोड़त नाहिं उमंग ।४।
बसन्त हरि प्रीति कर, जैसे जल से मीन ।
प्राण तजत है विरह में, जीवत ना क्षण तीन ।५।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे मछली नीर ।
जीवत जल से खेलती, बिछुड़त तजे शरीर ।६।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे भ्रमर फूल ।
लेत गन्ध बन्ध जात सो,होत न कब प्रतिकूल ।७।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे लोभी दाम ।
भूलत कबहुं न एक क्षण स्मरत आठों याम ।८।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे बालक मात ।
निशदिन स्मरत मात को, भूल न कबहूं जात ।९।
बसन्त हरि से प्रीति कर, त्याग सकल अभिमान ।
मान तजे बिन भक्त पर, रीझत ना भगवान ।१०।

प्रीति भुलावो जगत की, हरि की भूलो नांहि ।
त्याग प्रीति नर नाम की, ठौर न पावत कांहि ।११।
बसन्त हरि का ध्यान धर, जैसे चांद चकोर ।
ध्यान धरत क्षण एक नहिं, देखत काहूं ओर ।१२।
बसन्त ऐसे नाम रटि, जैसे पपोहा स्वान्ति ।
बूंद मिले बिन करत नहिं, अपने मन में शांति ।१३।
बसन्त इम हरि नाम का, श्रवण कर दिन रैन ।
चित्त धर के जिम सुनत है, हिरन नाद का बैन ।१४।
बसन्त बक बक छोड़ पुनि, मौन करे जप नाम ।
फुरने से मन रोक के, पाओ तुम आराम ।१५।
हंसी विषय विलास तज रोय भजो हरि नाम ।
हस कर ना किस पाइया, बसन्त हरि का धाम ।१६।
बसन्त हंसी करत जो, पुनि बोलत बहु बात ।
तांसे स्मरण होत नहिं भटकत सो दिन रात ।१७।



सोना और जागना

सोने में भयता रहे, जागे निर्भय होय ।
बसन्त तांते जाग कर, निर्भय रहिये लोय ।१।
बसन्त अविद्या नींद में, सोय रहा दिन रात ।
स्वप्न जगत के भोग बिन, सूझत और न बात ।२।
त्यागे अविद्या नींद को, बसन्त होय सुजाग ।
करे सङ्ग सत्पुरुष का, आतम अन्तर लाग ।३।
बसन्त अविद्या नींद से, जब जागस है जीव ।
तब पावत निज आतमा, सत्चित् आनंद शीव ।४।
मात पिता धन धाम सुत, बन्धु त्रिया नहिं तोर ।
बसन्त तांते जाग तूं, मोह नींद तजि घोर ।५।
काम क्रोध तस्कर बसे, बसन्त इस तन माँहि ।
ज्ञान रतन सो हरत है, जागो सोवत काँहि ।६।
बसन्त गफलत नींद से हरदम हो हुश्यार

पुनि नयनों की नींद तज, स्मरो सत् करतार ।७।
बहुत जन्म सोते गये, अब तो निन्द्रा त्याग ।
बसन्त जप हरि नाम को, मन में धरि अनुराग ।८।
सोय बिताये जन्म बहु, जागे जन्म न एक ।
बसन्त किया न कर्म शुभ, नहिं ली हरि की टेक ।९।
बसन्त जागी भजन कर, रहत सदा क्यों सोय ।
सोते आयू आपनी, दयी अमोलक खोय ।१०।
बसन्त निन्द्रा नयन की, त्यागे प्रात जाग ।
स्मरन कर गुरु शब्द का, तज विषयों का राग ।११।
बसन्त अमृत वेल में, आलस्य कर मत सोय ।
जागो हरि का नाम जप, मैल पाप को धोय ।१२।
बसन्त प्रातःकाल उठ, धरि मन गुरु का ध्यान ।
सोऽहं अजपा जाप जप, पावो पद निर्बान ।१३।
बसन्त अमृत वेल में, अमृत बरसे नीत ।
जागी उठ सो पीजिये, सोय रहो मत मीत ।१४।

अमृत वेला भजन की, भजन करो चित्त लाय ।
बसन्त मन को थिर करे, भजनानन्द को पाय ।१५।
बसन्त अमृत वेल में, यत्न करे कर योग ।
लाये अचल समाधि को, योगानन्द को भोग ।१६।
ब्रह्म मुहुर्त जाग के, बैठ करो वीचार ।
को मैं हूं को ब्रह्म है, को है यह संसार ।१७।
बसन्त पिछली रात को, सावधान हो जीव ।
छोड़ विषय रस वासना, नाम नाम रस पीव ।१८।
बसन्त पिछली रात को, जो जन रहता सोय ।
जीते निर्धन रोग युत, मर कर कूकर होय ।१९।
बसन्त जागत जो नहीं, मानुष तान को पाय ।
जाते भोगत बहुत दुःख, मरकर नरके जाय ।२०।
तजकर निन्द्रा नयन की, बसन्त जाग प्रभात ।
प्रभु का धर ध्यान तुम, बोल न दूजी बात ।२१।



मनुष्य देह की महिमा

उत्तम मानुष देह है, सब योनियों के माहिं ।
बसन्त मानुष देह सम, गण गन्धर्व सुर नाहिं ।१।
बसन्त मानुष देह को, पुनि पुनि चाहत देव ।
मनुष्य देह को करत है, निशदिन सुरगण सेव ।२
बसन्त मानुष देह है, शुभ गुण ज्ञान भण्डार ।
और देह में होत नहिं, प्रकट तत्त्व विचार ।३।
बसन्त मानुष देह के, सुन्दर अङ्ग आकार ।
और योनि टेढी सबी, देखो नयन पसार ।४।
पांच कला है मनुष्य में, चार कला पशु जान ।
तीन अण्ड दो स्वेद पुनि, इक उद्भुज पहिचान ।५
जाग्रत मानुष देह है, स्वप्न पशु तनु ओर ।
वनस्पती है नींद में, बसन्त कहत निचोर ।६।
बसन्त मानुष जगत में, सब का है आधार ।

जांके बस में रहत हैं, खग मृग सुर अवतार ।७।

और देह परतंत्र हैं, स्वतन्त्र मानुष देह ।
बसन्त चाहत कर्म जो, सो इस में कर लेह ।८।

बसन्त चेतन मनुष्य तन, पुरुषार्थ का गेह ।
तामें कर्त्तव्य कर्म कर, खोय न वृथा एह ।९।

बसन्त मानुष देह में, इन्द्रिय मन बुद्धि प्रान ।
चौदह हैं पुनि देवता, चेतन ज्योति महान ।१०।

भोग भोग शुभ कर्म कर, मानुष देह मंझार ।
भोग हेत पशु योनि है, नाहिं कर्म अधिकार ।११।

कर्म करे सुख स्वर्ग का, बसन्त पाय अपार ।
मुक्ति हेतु सत्संग कर, साधो साधन चार ।१२।

मनुष्य देह बिन हरि भजन, बसन्त होत न काहिं ।
बिना भजन हरि ज्ञान नहिं, मुक्ति ज्ञान बिन नाहिं।

धर्म कर्म हरि भजन हित, पाया नर तन मीत ।
बसन्त तांते युक्ति से, कर तीनों से प्रीति ।१४।

बसन्त कहत पुकार के, सुनो बचन मम एह ।
खोय न हरि के भजन बिन, दुलभ मानुष देह ।।
बसन्त पुनि पुनि मिलत है, धन योवन सुत नार ।
मानुष तन फिर मिलत नहिं, करके देख विचार ।।
पुण्य कर्म हरि भजन ते, पायो मानुष देह ।
बसन्त दीनी राम ने, तांको तुम जप लेह ।१७।
बसन्त दुर्लभ देह में, करो अलौकिक काम ।
मन जीते गुरु नाम जप, पावो पूर्ण धाम ।१८।
मनुष्य देह हरि भजन बिन, बसन्त निष्फल जान ।
तांते हरि का भजन कर, जांते हो कल्यान ।१९।
बसन्त मानुष देह में, अपना आप पछान ।
और देह में होत नहिं, निश्चय आतम ज्ञान ।२०।

मनुष्य देह का कर्त्तव्य

मानुष तन को पाय के, करो सदा उपकार ।

उपकारी को मिलत है, बसन्त स्वर्ग द्वार ।१।
मानुष तन को पाय के, किसको ना दुःख देह ।
बसन्त अहिंसा से सदा, सब का हित कर लेह ।२।
मानुष तन को पाय के, त्यागे विषय विकार ।
बसन्त हृदय में सदा, देवो गुण को धार ।३।
मानुष तन को पाय के, कीजे कपट न कूड़ ।
कपटी झूठे मनुष्य के, बसन्त मुख में धूड़ ।४।
मानुष तन को पाय के, तज मत्सर मद मान ।
बसन्त निश्चय कहत हूं, तोहि मिले भगवान ।५।
मानुष तन को पाय के, तज तूं लालच लोभ ।
बसन्त मन संतोष धर, पावो जग में शोभ ।६।
मानुष तन को पाय के, प्रभू से कर प्रेम ।
बसन्त तेरा हरि करे, निश्चय योग रु क्षेम ।७।
मानुष तन को पाय के, करो हरि का जाप ।
बसन्त अपने उदर हित, मत कीजे को पाप ।८।

मानुष तन को पाय के, तजो काम रु क्रोध।
कामी क्रोधी जीव को, बसन्त होत न बोध ।९।
मानुष तन को पाय के, सच्च का कर व्यापार।
बसन्त झूठ अन्याय कर, देख न नरक द्वार ।१०।
मानुष तन को पाय के, धन से कर ले दान।
बसन्त दानी पुरुष को, देत हरी धन मान ।११।
मानुष तन को पाय के, दीनों से कर प्यार।
बसन्त दीना नाथ हरि, तेरा करहिं उद्धार ।१२।
मानुष तन को पाय के, राख दया मन माहिं।
बसन्त निर्मल होय चित्त, दूर होत हरि नाहिं ।१३
मानुष तन को पाय के, जग से कर वैराग।
विषय भोग को त्याग के, बसन्त हो बड़ भाग ।१४।
मानुष तन को पाय के, निश दिन करो बिचार।
बसंत अवगुन झूठ तज, गहो सत्य गुन सार ।१५।
मानुष तन को पाय के, बसन्त छोड़ कुसंग।

निशदिन संतन संगकर, पावो पुरुष असंग ।१६।
मानुष तन को पाय के, नाम स्मर धर ध्यान ।
बसन्त तांते पाइये, मन में शान्ति महान ।१७।
मानुष तन को पाय के, पावो आतम ज्ञान ।
बसन्त तांसे नाश हो, मन का शोक अज्ञान ।१८।
मानुष तन को पाय के, ले सत्गुरु की ओट ।
बसन्त गुरु की शरण से, लगे न जम की चोट ।१९।
मानुष तन को पाय के, सत्गुरु की कर सेव ।
बसन्त जप गुरु नाम को, पाय निजातम भेव ।२०।

साधारण धर्म

वेद स्मृति जो कहत हैं, धर्म पछानो सोय ।
जिहं धारे सुख कीर्ती, बसन्त जग में होय ।१।
बसंत कहते वेद यह, परम धर्म निर्धार ।
तन मन धन से कीजिये, निशदिन श्रेष्टाचार ।२।

प्रातः शोच स्नान कर, स्मरण संजम ध्यान ।
दया मृदु शम शील दम, सत्य वचन तप दान ।३।
ब्रह्मचर्य अस्तेय धृति, क्षमा विराग विचार ।
गुरु सेवा निष्कामता, अहिंसा पर उपकार ।४।
श्रद्धा तितिक्षा मुमुक्षता, समता ज्ञान विज्ञान ।
बसन्त श्रेष्ठाचरण यह निर्भय तोष अमान ।५।
सदाचार सुख देत है, उभय लोक के मांहि ।
बसन्त इन बिन जगत में, सुख पावत को नाहिं ।६
धर्म रक्षा जो करत है, तांकी रक्षा होय ।
बसन्त त्यागे धर्म जो, नाश होत है सोय ।७।
लोक लाज भय लोभ से, धर्म न कबहूं त्याग ।
बसन्त लाखों कष्ट सह, करो धर्म में राग ।८।

वर्ण धर्म

चार वर्ण है जगत में, वेद कहत निर्धार ।

बसन्त गुण औ कर्म से, आप रचे करतार ।१।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य पुनि, चौथा शूद्र जान ।
बसन्त इनके धर्म अब, कहूं, सुनो दे कान ।२।
बसन्त सो है विप्र वर, जा माँहि सम सन्तोष ।
जप तप संजम धैर्य पुनि, हृदय राग न रोष ।३।
विष सम जाने विषय रस, सांप सरस सम्मान ।
बसन्त शव सम तीय लख, ब्राह्मण सो प्रधान ।४।
काम क्रोध, मद, ईर्षा, लोभ मोह अहंकार ।
बसन्त इनसे रहित जो, ब्राह्मण सो निर्धार ।५।
पढ़त पढ़ावत वेद पुनि, लेवै देवै दान ।
करत करावत यज्ञ जो, ब्राह्मण सो पहिचान ।६।
निशदिन बोलत सत्य जो, करत गुरु की सेव ।
धारे अहिंसा धर्म को, बसन्त सो भू देव ।७।
ध्यान धरे नित ब्रह्म का, जपे ब्रह्म का जाप ।
बसन्त ब्राह्मण सोय जो, जाने अपना आप ।८।

ब्रह्मचर्य को धार कर, राखे ओज अपार ।
बसन्त जीते इन्द्रिय मन, क्षत्री सो निर्धार ।६।
शस्त्र विद्या सीख ले, वेद पढ़े नित जोय ।
यज्ञ करे दे दान बहु, क्षत्री कहिये सोय ।१०।
सन्तों की सेवा करे, देत चोर को दण्ड ।
धर्म नीति से राज कर, क्षत्री सो प्रचण्ड ।११।
बसन्त जांके राज में, सुख पावत नर नार ।
राज करे बहु काल सो, जावत स्वर्ग मंझार ।१२।
जिस राजा के राज में, प्रजा अति दुःख पाय ।
तांका राज न रहत थिर, बसन्त कहि सत् भाय १३
जीवत जो नित धर्म हित, मरत, धर्म के हेत ।
बसन्त क्षत्री सो सदा, उभय लोक यश लेत ।१४।
अश्वमेध यज्ञ सहस का, बसन्त जो फल होय ।
प्रजा पाले मिलत है, भूपति को फल सोय ।१५।
राजा बिन प्रजा नहीं, प्रजा बिन नहिं राज ।

दोनों के मेलाप से, बसन्त हो सिद्ध काज ।१६।
दीन दूःखारी मनुष्य का, आंसू पोषत जोय ।
देत हर्ष पुनि ताहिं को, राजा कहिये सोय ।१७।
बसन्त माली बाग को सीञ्च लेत जिम फूल ।
प्रजहिं दे सुख भूप तिम, पुनि धन ले अनुकूल ।१८
बसन्त जगमें करत जो, निशदिन वणिज्य व्यापार ।
चलत धर्म मर्याद से, सो है वैश्य उधार ।१९।
बसन्त बोये खेत जो, उपजावे बहु धान ।
गोधन की रक्षा करे, वैश्य सोय प्रधान ।२०।
देते धन से दान जो, करे वेद विधि याग ।
बसन्त विद्या को पढ़े, वैश्य सोय बड़ भाग ।२१।
बसन्त जो सेवा करे, होय सदा निर्मान ।
तांसे जीवन जो करे, शूद्र सो पहिचान ।२२।
कष्ट चरम लोहादिका, काम करे नित जोय ।
तांसे निज पोषण करे, शूद्र कहावे सोय ।२३।

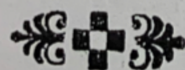
बसन्त खावत मांस मद, दुःख सर्व को देह ।
दया हीन पुनि क्रूर हो, अन्त्यज लक्षण एह ।२४।
बसन्त मुख है विप्रवर, बाहू क्षत्रिय जान ।
उरु वैश्य पद शूद्र हैं, वेद करत वख्यान ।२५।
जैसे चारों अङ्ग से, बसन्त पूरण देह ।
तैसे चारों बरण से, पूरण जग लख लेह ।२६।
ज्ञान शक्ति धन सेव को, चाहत है नर नार ।
इन चारों बिन चलत नहिं, बसन्त यह संसार ।२७।
ब्राह्मण धारे ज्ञान को, क्षत्रिय हो बलवान ।
वैश्य उपाये द्रव्य को, शूद्र सेवा ठान ।२८।
जिस मानुष में कम गुण, नाहिं वर्ण अनुसार ।
बसन्त सो नर अधम है, जावत नरक द्वार ।२९।
अपने अपने धर्म से, सबका होत कल्यान ।
आन धर्म से मिलत नहिं, बसन्त सुख सन्मान ।३०।
बसन्त अपने धर्म में, मरना जीवन जान ।

और धर्म में जीवना, मरने के सम जान ।३१।
बसन्त निज निज धर्म से, सब जन राखो हेत ।
प्रीति नीति प्रतीति से, राख धर्म का खेत ।३२।
जिस नर का निज धर्म में, पूर्ण नहिं विश्वास ।
सो नर पावत चैन नहिं, बसन्त रहत उदास ।३३।
बसन्त जग में धर्म सब, पहुंचावत हरि धाम ।
तो भी अपने धर्म से, पावो तुम विश्राम ।३४।
बसन्त श्रद्धा प्रीति से, धर्म सर्व फल देह ।
बिन विश्वास न होत कछु, सन्त कहत है एह ।३५।
वर्ण धर्म के पालते, सुमरो हरि का नाम ।
बसन्त जीवत पाय सुख, मर कर जा हरि धाम ।३६

"उत्तम धर्म"

सब धर्मों में सार इक, चित्त की शुद्धता जान ।
बसन्त चित्त शुद्धता बिना, धर्म न पूरण मान ।१।

बसन्त अशुद्ध विचार तुम, मति कीजे मन माहिं।
सद्गति मलिन विचार से, कोऊ पावत नाहिं ।२।
बसन्त जिस जिस कर्म से, चित्त की शुद्धता होय ।
निशदिन श्रद्धा प्रेम से, कर्म करो तुम सोय ।३।
मन इन्द्रियों के दमन बिन, हृदय शुद्ध ना होय ।
बसन्त चित्त शुद्धता बिना, ज्ञान न पावे कोय ।४
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति हो, बसन्त निश्चय जान ।
तांते आतम ज्ञान हित, शम दम साध सुजान ।५।
विषय त्याग बिन दमन नहिं, त्याग न बिन वैराग ।
बिन विवेक वैराग नहिं, बसन्त तां महिं लाग ।६।
सत्य असत्य को जानना, विवेक कहिये सोय ।
बसन्त है सत् आतमा, झूठ अनातम होय ।७।
त्याग अनात्म वस्तु को, आतम से कर राग ।
सत्य धर्म यह सर्व में, बसन्त इन में लाग ।८।



"गुण प्रशंसा"

गुणी पुरुष सब देश में, ऐसे शोभा पात ।
जैसे मस्तक मुकुट में, बसन्त मणि सोहात ।१।
प्रकट करत गुणवान को, बसन्त गुण जग माहिं ।
जैसे सुगन्धी पुष्प को, कबहुं छिपावत नाहिं ।२।
बसन्त गुण गुणवान का, आपहिं प्रकट होत ।
तेज प्रकट जिम होत है, जग में भानु उद्योत ।३।
गुणी पुरुष के संग में, निर्गुण हो गुणवान ।
चंदन के संग नीम जिम, चंदन हो प्रधान ।४।
बसन्त गुण औ देह में, अन्तर बहु पहिचान ।
थोरे दिन तन रहत है, गुण बहु दिन थिर मान ।५।
बसन्त उद्यम नित करो, गुण धारण के माहिं ।
कितना तर धनवान हो, गुणी पुरुष सम नाहिं ।६।
बसन्त गुण हित यत्न कर, काहि संवारत रूप ।

ज्यों शोभत तिय धर्म से, नहिं सुन्दर स्वरूप ।७।

गुण से होवै गौरता, बिन गुण होय न मान ।
गन्ध हीन जिम पुष्प का, करत न को सन्मान ।८।

गुण का कदर न होत है, बिन ग्राहक जग माँहि ।
बसन्त जिम बिन जौहरी, हीरे का मुल्ह नाँहि ।९।

बसन्त निज गुण कहत ही, ऊंच नीच हो जात ।
तांते निज गुण भाख मत, सन्त कहत अस बात ।१०।

नर पूजत निज गुणन कर, कुल कर पूजत नाँहि ।
पूजत ना वासुदेव कर, वासुदेव जग माँहि ।११

बसन्त गुण गुणवान का, जानत है गुणवान ।
जैसे जग में रूप को, आंख करत पहिचान ।१२।

निर्गुण अवगुण गाहकी, बसन्त बहु जग माँहि ।
गुणी पुरुष गुण गाहकी, थोरे हैं बहु नाँहि ।१३

बोल न गुण गुणवान डिग, वह जानत है आप ।
बसन्त शठ को मत कहो, वह सुन दे संताप ।१४।

पावत यश नर गुणन कर, ना जाति कुल जान ।
जाति हीन गुणवान नर, कीर्ति पाप महान ।१५।
गुणी जन जानत गुणन रस, निर्गुण जानत नाहिं ।
पिक जानत है मधुर रस, कौवा जानत काहिं ।१६।
बसन्त बल बलवान का, जानत इक बलवान ।
हस्ती जानत शेर बल, नहिं मूशक पहिचान ।१७।
बहुत दोष कर युक्ति नर, इक गुण को प्रधान ।
बसन्त वे भी जगत में, पावत है सन्मान ।१८।
सर्व शास्त्र सब वस्तु से, सारु लेत बुद्धिमान ।
बसन्त जिम सब वृक्ष से, मधुमखी ले मिष्ठान ।१९

"सन्तों की महिमा"

राग तजे इस जगत का, धारत जो वैराग ।
रहत मगन हरि भजन में, सो है सन्त सुजाग ।१।
निन्दा विपदा में कभो जो, न तजत सत्पन्थ ।

सत् मार्ग में चलत पुनि, बसन्त सो है सन्त ।२।

बुरे संग से जो बुरा, बसन्त कबहुं न होय ।
भला बुरे का करत जो, साधू कहिये सोय ।३।

आतम चिन्तन करत जो, भेद भरम को तोड़ ।
बसन्त सोई सन्त है, तांसे मन को जोड़ ।४।

निष्कामी निर्मान शुच, ब्रह्म ज्ञान जिह होय ।
बसन्त तांका संग कर, निज साधू है सोय ।५।

बसन्त युवति देख जो, हर्षत नहिं मन मांहिं ।
देख काल को डरत नहिं मान मुक्त तुम तांहिं ।६।

स्तुति निन्दा हर्ष पुनि, शोक न जांको होय ।
ग्रहण त्याग से रहित जो, बसन्त सन्त है सोय ।७।

सुख दुःख आदि द्वन्द जो, जा मन दृढ़ न होय ।
बसन्त आत्म निष्ठ जो, ज्ञानी कहिये सोय ।८।

सब में हरि को देख के, करत सर्व की सेव ।
बसन्त पुनि निर्मान हो, सो है देवन देव ।९।

ज्ञानी हो अभिमान कर, सो है मूंढ अजान ।
बसन्त ज्ञानी नम्र हो, सो है सन्त सुजान ।१०।
बसन्त ज्ञानी होय जो, जीते काम रु क्रोध ।
हर्ष शोक बिन शान्त चित्त, तांका हो दृढ़ बोध ।
देवी गुण हरि भजन पुनि, जांके संग बढ़ जाय ।
तिस साधू का संग कर, बसन्त शान्ती पाय ।१२।
ब्रह्म ज्ञान हरि प्रेम रस, जे तुम चाहत मीत ।
बसन्त श्रद्धा से करो, सन्तन से तुम प्रीत ।१३।
सब तीर्थों से अधिक है, सत्पुरुषों का संग ।
बसन्त सत्संग देत है, तच्छिन्न मन में उमंग ।१४।
कोटि रवि शशि के उदे, हृदय तम नहिं जात ।
सन्तन के सत् वचन सुन, अविद्या तिमर नशात १५
राखत जो सत्संग में, श्रद्धा पुनि विश्वास ।
बसन्त तांके मिटत दुःख, कारज हो पुनि रास ।१६।
सन्त चरन रज शीश जो, राखत श्रद्धावान ।

बसन्त तांको मिलत है, सम्पत्ति सूख महान ।१७।
बसन्त खावत सन्त जो, सो अमृत हो जात ।
मनुष अमर सो होत जो, शोत प्रसादी पात ।१८।
सन्तन की सेवा करे, बसन्त हो निष्काम ।
ज्ञान पाय निर्मान हो, पावत सो हरि धाम ।१९।
शोक मोह का हेतु है, मूंढ पुरुष का संग ।
धर्म कर्म हरि भक्ति का, कारण है सत्संग ।२०।

"सत्संग"

सत्संग की महिमा कहूं, सुनो सज्जन चित्त लाय ।
दुःख हरे सुख देत है, सत्संग सहज सुभाय ।१।
सत्संग तीर्थराज है, सत्संग है हरि धाम ।
बसन्त सत्संग करत जो, पावत सो विश्राम ।२।
दुस्तर भव सिन्धु तरत नर, सत्संग के प्रसाद ।
बसन्त सहजे पाय है, आनन्द धाम अनादि ।३।

बसन्त नित सत्संग कर, मन में धार उमंग ।
श्रद्धा से सत् वचन सुनि, चढ़े राम का रंग ।४।
सत् मार्ग संसार में, सत्संग देत बताय ।
बसन्त उर की तम हरे, दीपक ज्ञान जगाय ।५।
सत्पुरुषों के संग से, बसन्त उन्नति होय ।
कीर्ति सम्पत्ति सुमति गति, पावत है सब कोय ।
जिम चंदन के संग से, कीकर चंदन होय ।
तिम साधू के संग से, शठ भी साधू जोय ।७।
सीप संग जल बून्द जिम, मोती होत महान ।
बसन्त तैसे संत संग, होवत नर बुद्धिमान ।८।
बसन्त साधू संग से, निर्मल मन हो जाय ।
जैसे जल सब मैल हर, ऊजल देत बनाय ।९।
बसन्त साधु वैद्यसम, औषधि ज्ञान खिलाय ।
मन का अविद्या रोग हर, आतम शक्ति बढ़ाय ।१०
बसन्त जिम दीपक हरे, मंदिर का अन्धकार ।